कुषाण मुद्राओ पर शिव परिवार का अंकन

अजीत कुमार चौधरी[1]

ईसवीं सन् के प्रारम्भ में (ल० 15 ई०) भारत के राजनैतिक इतिहास में कुषाणवंश का अभ्युदय हुआ। कुषाण शासक पूर्ववर्ती भारतीय यवन, शक और पहलव राजवंशों के समान ही विदेशी मूल के थे। ये यूची जाति की ही एक शाखा के लोग थे जिनका मूलस्थान चीन था।[1] भारतीय संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता यह रही है कि विदेशी जातियाँ भी यहाँ की सांस्कृतिक परम्परा में पूरी तरह समाहित हो गयी थी। मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् कुषाण राजवंश ने ही भारत की राजनैतिक प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया। इनका उत्तर भारत के अधिकांश भूभाग पर अधिकार के साथ ही मध्य एशिया पर भी प्रभाव था।[2] इस प्रभाव के फलस्वरूप भारत का विदेशों के साथ बहुमुखी सम्पर्क स्थापित हुआ। राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ ही कुषाण काल धर्म, साहित्य, मूर्तिकला, विशेषतः बौद्धधर्म के महायान सम्प्रदाय एवं गन्धार मूर्ति कला, आदि के प्रभूत विकास की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण था।[3]

कुषाण शासकों ने सोने तथा ताँबे में अपनी मुद्राएँ जारी की। कुजुलकडफाइसिस द्वारा जारी किए गये प्रारम्भिक कुषाण सिक्के ताँबे के थे। विमकडफाइसिस ने ताँबें के साथ ही सोने की मुद्राएँ भी जारी कीं। विमकडफाइसिस कुषाण वंश का अन्तिम शासक था, जिसके सिक्के के पूरे भाग पर ग्रीक तथा पृष्ठ भाग पर खरोष्ठी में लेख मिलते हैं। कनिष्क ने इस प्रथा को समाप्त कर अपनी मुद्राओं पर केवल ग्रीक लिपि में ही लेखों का अंकन कराया, जिसका बाद के सभी कुषाण शासकों ने अनुकरण किया।[4] इन मुद्राओं पर कुषाण शासकों की प्रतिकृतियों के साथ ही विभिन्न धर्मों की देवाकृतियों का भी अंकन हुआ है, जिनसे तत्कालीन धर्म के साथ ही शासकों की धार्मिक आस्था रूझान पर भी महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इन मुद्राओं पर बुद्ध, शिव, उमा, कार्तिकेय जैसे भारतीय देवी–देवताओं के अंकन के साथ ही ईरानी, यूनानी देवी–देवताओं का भी अंकन हुआ है। यह तथ्य दो या दो से अधिक देशों के मध्य के धार्मिक–सांस्कृतिक आदान–प्रदान की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। विदेशी देवी–देवताओं में प्रमुखतः हेलिओस–मिहिर (सूर्य), माओ (चन्द्रमा), ओएडो (वायु देवता), फररो एवं अथासो (अग्निदेवता), नाना एवं ओरडोकशो (लक्ष्मी) आदि का अंकन हुआ है। ये देवी–देवता सामान्यतः आयुधो के आधार पर भारतीय देवी–देवताओं के समरूप है। वी०एस० अग्रवाल के अनुसार केवल कनिष्क की ही मुद्राओं पर ईरानी, यूनानी, बौद्ध, ब्राह्मण धर्मों के 30 से अधिक देवी–देवताओं का निरूपण हुआ है।[5] भारतीय और विदेशी संस्कृतियों का स्पष्ट सामंजस्य इन देवाकृतियों के निरूपण में परिलक्षित होता है।

कुषाण मुद्राओं पर शैव परिवार के शिव, कार्तिकेय, गणेश (?) और उमा

[1] प्रा. भा. इति. सं. एवं पुरातत्व विभाग, का.हि.वि.वि., वाराणसी

का अंकन हुआ है। शैव देवकुल के प्रतिनिधि देव शिव का अंकन सर्वाधिक लोकप्रिय था।[6] कुजुलकडफाइसिस के अतिरिक्त अन्य सभी प्रमुख कुषाण शासकों की मुद्राओं पर शिव का विभिन्न रूपों में निरूपण हुआ है। टार्न के अनुसार शिव का मानवरूप में अंकन सर्वप्रथम कुषाण मुद्राओं पर ही हुआ।[7] लेकिन बनर्जी इस मत को स्वीकार नहीं करते, उनके अनुसार मुद्राओं पर शिव का प्रारम्भिकतम अंकन उज्जैनी की मुद्राओं पर है।[8]

कुषाण मुद्राओं पर शिव के निरूपण में प्राप्त विविधता प्रतिमालाक्षणिक दृष्टि से विशेष महत्त्व है। शिव कभी द्विभुज और कभी चतुर्भुज है। सभी उदाहरणों में शिव स्थानक मुद्रा में है। कहीं तो शिव का अंकन तथा कहीं अपने वाहन नन्दी के साथ हुआ है। कुछ उदाहरणों में शिव त्रिमुख भी हैं जो हमें परवर्ती काल की विश्वप्रसिद्ध एलिफेण्टा की शिव की त्रिमूर्ति (महेश मूर्ति) का स्मरण कराती है। शिव के विभिन्न हाथों में परशु, त्रिशूल, व्याघ्रचर्म, डमरू जैसे पारम्परिक आयुधों के साथ ही जनकन्धा, बज्र, चक्र, पद्म, पाश, शूल, दण्ड, गदा एवं अंकुश आदि भी प्रदर्शित हैं। तात्पर्य यह कि प्रतिमालाक्षणिक दृष्टि से कुषाण मुद्राओं की शिवाकृतिया पूर्णतः विकसित है। यहाँ इस बात का उल्लेख प्रासंगिक होगा कि शिव की कुषाणकालीन स्वतन्त्र मानव मूर्तियों में इतनी विविधता नहीं प्राप्त होती। ज्ञातत्व है कि नन्दिवाहन के साथ शिव का अंकन स्वतन्त्र मूर्तियों में भी हुआ है।[9]

सर्वप्रथम विमकडफाइसिस की मुद्राओं पर शिव अंकन मिलता है। इन पर शिव का प्रतीक (त्रिशूल–परशु–नन्दीपद) तथा मानव दोनों ही रूपों में अंकन है। इनमें त्रिभुज शिव के दाहिने हाथ में त्रिशूल या परशु–त्रिशुल है, और नीचे लटकी हुयी बायीं भुजा में जलपात्र और व्याघ्रचर्म है। कभी–कभी शिव का बायाँ हाथ नन्दी के ऊपर भी टिका है। कभी तो शिव के पीछे आभा जैसी प्रदर्शित है और कभी सिर से अग्नि–शिखाओं को निकलते हुए प्रदर्शित किया गया है। इन मुद्राओं पर शिव आकृति के समीप ही 'नन्दी पद' प्रतीक अंकित है। साथ ही खरोष्ठी लिपि में 'ईश्वरस (महिश्वरस) उत्कीर्ण है जो शिव का ही नाम है।[10]

कनिष्क एवं हुविष्क की मुद्राओं पर शिव (ओएशो) का द्विभुज और चतुर्भुज दोनों ही रूपों में अंकन हुआ है। द्विभुज शिव के साथ वाहन नन्दी है तथा करों में त्रिशूल और जल पात्र हैं।[11] कनिष्क की कुछ ताम्र मुद्राओं पर शिव के दाहिने हाथ में शूल (या दण्ड) है तथा बायाँ हाथ गदा पर स्थित है। कनिष्क और हुविष्क की स्वर्ण एवं ताम्र मुद्राओं पर शिव की चतुर्भुज आकृतियों के गले में माला और हाथों में विभिन्न आयुध प्रदर्शित है। चतुर्भुज शिव के हाथों में क्रमशः वज्र (डमरू–ह्वाइट हैड), जलपात्र, त्रिशूल और मृग है। कुछ मुद्राओं पर निचले दाहिने हाथ में जलपात्र के साथ ही अंकुश भी है। यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि किसी देवता के एक ही हाथ में दो आयुधों का साथ–साथ प्रदर्शन भारतीय परम्परा में लोकप्रिय नहीं रहा है।[12] ताम्र–मुद्राओं की आकृतियों में शिव के एक हाथ में पाश है, तथा दूसरा हाथ या तो कमर पर रखा है या फिर नीचे की ओर लटका हुआ है और एक अन्य में जलपात्र है।[13]

हुविष्क की स्वर्ण मुद्राओं पर चतुर्भुज शिव तीन मुखों वाले हैं और उनके हाथों में क्रमशः त्रिशूल, वज्र, गदा और जलपात्र प्रदर्शित है।[14] त्रिमुख शिव

ऊर्ध्वरेखा, अधोवस्त्रधारी, मृग, चक्र, त्रिशूल और वज्र से युक्त है।[15] ऊर्ध्वलिंग शिव का अंकन कुषाण मूर्तियों में भी पर्याप्त लोकप्रिय था। शिव का त्रिमुख होना समन्वयवादी या संघाट देवमूर्तियों के निर्माण की परम्परा का साक्षी है, जिसे कुषाणकालीन शिव–विष्णु की संयुक्त मूर्ति (हरिहर) में भी देखा जा सकता है।[16] धार्मिक इतिहास की दृष्टि से ऐसी संयुक्त मूर्तियों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि इनमें एक ही देवता के विभिन्न स्वरूपों और साथ ही दो अलग देवताओं के संयुक्त रूपों की जानकारी मिलती है, जिनसे विभिन्न सम्प्रदायों के आपसी सम्बन्धों पर भी प्रकाश पड़ता है।

वासुदेव की मुद्राओं पर शिव को सामान्यतः द्विभुज तथा एक या तीन मुखों वाला और नन्दीवाहन के साथ अंकित किया गया है।[17] कनिंघम ने वासुदेव के एक ऐसे सोने के सिक्के का उल्लेख किया है जिसमें त्रिमुख और चतुर्भुज शिव का अंकन हुआ है। नन्दीवाहन से युक्त शिव के करों में जलपात्र, पाश, त्रिशूल और व्याघ्रचर्म है।[18] द्विभुज शिव की भुजाओं में सामान्यतः पाश और त्रिशूल है। शिव को केशरचना जटाजूट के रूप में प्रदर्शित है। ब्रिटिश संग्रहालय में सुरक्षित वासुदेव की दो स्वर्ण मुद्राओं पर पंचानन आकृति (शिव) का अंकन माना गया है। इस पर ग्रीक लिपि में 'ओएशो' (शिव का नाम) लिखा है।[19] इन मुद्राओं को सूक्ष्मता के साथ देखने पर शिव का पंचमुख के स्थान पर त्रिमुख होना पूरी तरह स्पष्ट है।

शिवपुत्र कार्तिकय देव सेनापति है। इनका प्रारम्भिकतम अंकन यौधेय मुद्राओं पर युद्ध के देवता के रूप में हुआ है। कुषाण काल में कार्तिकेय की कई स्वतन्त्र मूर्तियां बनी, जो कार्तिकेय पूजन की लोकप्रियता की साक्षी है। कार्तिकेय के अतिरिक्त स्कन्द, कुमार और विशाख की भी पूजा प्रचलित थी। मूर्तियों में द्विभुज कार्तिकेय का वाहन कभी कुक्कुट और कभी मयूर है। देवताओं के दाहिने हाथ से अभयमुद्रा व्यक्त है तथा बाएं हाथ में शक्ति है।[20]

हुविष्क एक मात्र विदेशी शासक था जिसने अपनी मुद्राओं पर कार्तिकेय को अंकित कराया। हुविष्क के सिक्कों पर कार्तिकेय का अंकन स्कन्द, कुमार, विशाख और महासेन नामों से हुआ है।[21] पहले वर्ग में महासेन नाम वाले देवता हैं जो प्रभामण्डल, अधोवस्त्र और ऊपरी भाग में संघाटी जैसे वस्त्र से युक्त हैं, जिनके दाहिने हाथ में दण्ड है जिसके शीर्ष भाग पर कोई पक्षी (सम्भवतः मयूर) बना है। देवता का बायाँ हाथ कमर से बँधे खड्ग के ऊपरी भाग पर स्थित है।[22] दूसरे प्रकार के अंकन में आमने–सामने प्रभामण्डल से युक्त दो आकृतियों खड़ी हैं, जिनके नीचे क्रमशः स्कन्दकुमार और विशाख उत्कीर्ण है। दोनों आकृतियों की कमर से खड्ग लटक रही है। स्कन्दकुमार के दाहिने हाथ में एक लम्बा शूल प्रदर्शित है। विशाख को स्कन्दकुमार का दाहिना हाथ अपने हाथ में लिये हुए दिखाया गया है।[23] तीसरे प्रकार के अंकन में एक देवालय में तीन अलग–अलग आकृतियाँ खड़ी हैं, जिनके नीचे क्रमशः स्कन्दकुमार, महासेन और विशाख लिखा है। उपर्युक्त आकृतियों के समान ही इनमें भी कमर से खड्ग लटक रही है। इन आकृतियों के समान लक्षणों के आधार पर इनके एक ही देवता के तीन रूपों में अभिव्यक्ति की बात समर्थित होती है।[24] हुविष्क की मुद्राओं पर प्राप्त अंकन के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय तक

कार्तिकेय की लाक्षणिक विशेषताएँ स्थिर नहीं हो पाई थीं। इनमें शूल के अतिरिक्त अन्य कोई पारम्परिक विशेषता परिलक्षित नहीं होती है।

सिद्धिदायक और विध्ननाशक गणेश की स्वतन्त्र मूर्तियों का स्पष्ट निरूपण कुषाणकाल में नहीं हुआ। भारतीय संग्रहालय कलकत्ता में सुरक्षित हुविष्क की ताम्रमुद्रा पर गणेश का सम्भावित अंकन हुआ है। पृष्ठ भाग पर एक धनुर्धारी पुरूषाकृति लम्बे धनुष के साथ खड़ी है। धनुष की प्रत्यंचा भी स्पष्ट है। दाहिनी ओर प्राचीन भारतीय ब्राह्मी लिपि में स्पष्टतः 'गणेश' लिखा है।[25] जे०एन० बनर्जी उपर्युक्त आकृति को गणेश के स्थान पर शिव का अंकन मानते है। उनके अनुसार यह आकृति न तो गजानन है और न ही लम्बोदर है, और न ही इसमें गणेश के कोई अन्य लक्षण प्रदर्शित है। इसके विपरीत बनर्जी ने रामायण का एक सन्दर्भ देते हुए उसे शिव का निरूपण बतलाया है। उस सन्दर्भ में शिव का गणेश नाम से उल्लेख हुआ है। ज्ञातव्य है कि प्रारम्भिक काल में धनुष शिव का मुख्य आयुध था।[26]

कुषाण मुद्राओं पर शिव का अपनी शक्ति उमा के साथ ही अंकन हुआ है। पंजाब संग्रहालय में सुरक्षित हुविष्क के एक सिक्के पर पुरूष और स्त्री की युगल आकृतियाँ आमने सामने खड़ी है। दोनों आकृतियों के मध्य में कुषाण मोनोग्राम बना है। स्त्री आकृति के समीप ग्रीक लिपि में एक लेख है जिसमें 'नाना' का नामोल्लेख है। पुरूष आकृति को लेख में ओएशो (शिव) कहा गया है। लेख तथा आकृति के आधार पर 'नाना' की पहचान उमा से की गयी है। हुविष्क के ही कुछ अन्य सिक्कों पर देवी का स्पष्ट अंकन ओम्मो (उमा) नाम से भी हुआ है। लाक्षणिक विशेषताओं के आधार पर पुरूषाकृति स्पष्टतः शिव की है। देवी के हाथ में सम्भवतः कोई पुष्प है।[27] बनर्जी के अनुसार उमा का हुविष्क की कुछ मुद्राओं पर स्वतन्त्र अंकन भी हुआ है, जहाँ इनके हाथ में कमल के स्थान पर कार्नकोपिया प्रदर्शित है। अंकित लेख में ओम्मो (उमा) लिखा है। बनर्जी ने इनकी पहचान लेख के आधार पर उमा से की है।[28]

सन्दर्भ सूची

1. सरकार, डी०सी०, 'दि कुषाणज'–दि एज ऑफ इम्पीरियल यूनिटि, अध्याय 9, बम्बई, 1953, पृ० 136, गुप्ता, पी०एल०, 'क्राइॅन्स–इण्डिया दि लैण्ड एण्ड दि पिपुल, दिल्ली, 1969, पृ० 27।
2. सरकार, डी०सी०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 153।
3. वही, पृ० 153।
4. गुप्ता, पी०एल०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 28–29।
5. अग्रवाल, वी०एस०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 246।
6. विस्तार के लिए द्रष्टव्य, शर्मा, सविता एवं तिवारी, मारूति नन्दन, 'शिव ऑन कुषाण कॉइन्स', जर्नल न्यूमिस्मेटिक सोसाइटी ऑव इण्डिया, ख० 45, 1983, पृ० 134–49।
7. टार्न, डब्ल्यु, डब्ल्यु. दि ग्रीक्स इन बैक्ट्रिया एण्ड इण्डिया, पृ० 402।
8. बनर्जी, जे०एन०, दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, कलकत्ता, 1956, पृ० 117।
9. अग्रवाल, वी०एस०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 267–69।
10. बनर्जी, जे०एन०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 122; ह्वाइटहेड, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 183; स्मिथ, वी०ए०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 68।

11. बनर्जी जे०एन०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 122, ह्वाइटहेड जलपात्र को मानव सिर बताते हैं जो बनर्जी को अस्वीकार्य है।
12. बनर्जी, जे०एन० पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 122।
13. वही, पृ० 122।
14. वही, पृ० 122 : हुविष्क की स्वर्ण मुद्राओं की एकमुख शिव मूर्ति के हाथों में भी लगभग यही सामग्री प्रदर्शित है।
15. बनर्जी, जे०एन०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 123; गार्डनर, पी० ब्रिटिश म्यूजियम केटलाग ऑफ कॉइन्स ऑफ दि ग्रीक एण्ड सीथिक किंग्स ऑफ बैक्ट्रिया एण्ड इण्डिया, लन्दन, 1886, पृ० 148, फलक, 28।
16. बनर्जी, जे०एन०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 124।
17. वही, पृ० 127।
18. कर्निंघम, ए ० कॉइन्स ऑफ इण्डोसीथियनस एण्ड कुषाण, अंक 3, पृ० 74, फलक 24, चित्र 9।
19. ह्वाइटहेड, आर०बी०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 208, न्युमिसमेटिक क्रोनिकल, 1982, फलक 14, चित्र 7, 8, 9।
20. अग्रवाल, वी०एस०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ 270–71।
21. बनर्जी, जे०एन०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 145–46, पुरी, वी०एन०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 57, डी०आर० भण्डारकर, स्कन्द, कुमार, विशाख और महासेन इन्हें चार अलग–अलग देवताओं का अंकन मानते है। (कारमाइकल लेक्चर्स, द्वितीय खण्ड, 1921, पृ० 22–23), आर०जी० भण्डारकर (कलेक्टेड वर्क्स, खण्ड 4, पृ० 215) के अनुसार महासेन और कुमार स्कन्द के ही दूसरे नाम है।
22. बनर्जी, जे०एन०, पूर्व निर्दिष्ट, 144–45, एलन, जे० 'ए केटलाग ऑफ दि कॉइन्स इन दि ब्रिटिश म्यूजियम, आक्सफोर्ड, फलक 28, चित्र 22, 23; गार्डनर, पी०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 138।
23. बनर्जी, जे०एन०, पूर्व निर्दिष्ट पृ० 145–46; एलन, जे०, पूर्व निर्दिष्ट, फलक 28, चित्र 24।
24. स्मिथ, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 81, फलक 13, चित्र 4; बनर्जी, जे०एन०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 125, एक अन्य उदाहरण में भी ऐसा ही अंकन प्राप्त हुआ है जो स्पष्ट नहीं हैं, (जर्नल ऑफ दि एशिएटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, अंक 1, पृ० 3, फलक 1 चित्र 6)
25. बनर्जी, जे०एन०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 125–26।
26. वही, पृ० 126–27, रैप्सन, इ०जे०, जर्नल ऑफ दि रायल एशिएटिक सोसाइटी, 1897, पृ० 324।
27. कर्निंघम, ए०, न्युमिसमेटिक क्रोनिकल, सीरीज 3, खण्ड 12, फलक 13, दि कॉइन्स ऑफ इण्डोसीथियनस् एण्ड कुषाणस, फलक 23, चित्र 1।
28. बनर्जी, जे०एन०, पूर्व निर्दिष्ट, पृ० 136।